

१११) शिवसिधिनो योक्त्वते
मार्गं चो ज्ञाप्यते
स्यमेवोपायः

3408

ASHA ARCHIVES

天

五

21213

लारिना॥ नूट् पं गय न ह लं वल द व पू मा व दौ॥ न ट क क
हो ना वा. द वा व व य न व ला॥ क प टी लं स दा क क ला रि या यि सु नि मि
नो॥ भू र्थो य स उ न हं सि क ला वि भू ४ समा धु य न॥ नून क म य र थे ४ क
शो व ल द वं य सा द य न॥ सा पि वि क क मि ल्य लो य यो वे द नं म सु ल
॥ कृ प्प वि ग थ मा नू कृ दा न कृ पि य थो यू न ४॥ ग थे वा वू र्ज ना स र्वे न सा
श्री या न र्थ रू नि ४॥ नि षा सि ता न ल ला ला कृ ष्ट जा नो व ला व ली
कु ला दी न व द न ४ पा यो ने व हि ला नि य॥ वृ थ नि भ य स र्वे य
हं व स उ य य नि॥ नू कृ गो पि वि नी कु म्भ ता थ या या मि ष्ट य न ४॥

का शी ग ल सु ख ना सो ग क रू प ति प्र रू॥ ता प मू ला द या मा स ग न उ
य ल वृ ष्ठी मा न॥ सु ना ल य ग रू षि ग्रे न ग र्ज स स क ल य थ न॥ न द र्शि त
न व ग्रा ग्ग दू ग या न न वि दू र्ण॥ श्रु ति ना ध र्थ ग ग म ति सूर्य स्थानि
श्चि त॥ वृ थ प चा द व कृ लं या य मा न क थं स रू न॥ ०० ति गु स ल व र्क
पू ना न द ४ स मू प स्ति त ४॥ गृ हि ला त ल्हा ना यू जो सु ख सि नं ह मा उ
वी न॥ ॥ ना न द उ वा च॥ कि म र्थ वि द्य स द व किं वा त (भा क का न र्ण
॥ य थो ह रू स मा व ह ना न का य च क भ व ४॥ **ना न द उ वा च॥** जाना मि

कात्रनेदव, यदर्थ लाङ्कनं गव॥ त्वयार्हदपदं शुक्रवर्णय न्युद
र्जनं॥ कर्मजनसमूहं लङ्कनं वृत्तेव हि॥ **श्रीकृष्ण उवाच**॥ वद
नात्र दमभाषु, कादा घृष्ट दर्जनं॥ किमर्थं तु दिगीया यां न स्य क
र्वन्निदं दर्जनं॥ **नात्र द उवाच**॥ गत नारथ न सक्त मफ, श्व न्यु मात्रूय
द मित्रं॥ त्वदं गत न नासां हि, वृथा निन्दारु विप्रानि॥ **श्रीकृष्ण उ**
वाच॥ किमर्थं गत नारथ न सक्त मफ, श्व न्यु मात्रूय॥ वृत्त मात्रानकं
रघुर्षं, यथा वद कुमहे सि॥ **नात्र द उवाच**॥ गत नो माधिर्यं वग

द सवक्रतापूना॥ नू हि मामहि मात्रेव लयि मागत्रि मात था॥ या का
म श्ववगित्वं, नृथ का भाव सायिना॥ रायार्थिषु ददो दवा, ग रस म
स्य प्र जायति॥ पूजयित्वा गत मथ दं सुनि कर्तुं प्रवक्तु भा॥ **श्रीकृष्ण उवा**
च॥ गजवर्कं गत मथ दं लं वा द ग व गय द॥ विद्या धाम मथ दं व
रम, सुप्रि संल न का न कथा॥ संपूजय गत मथ दं भाद का ये प्र यत्नः
नशा न वां प्र जा यत सिद्धि, निविष्टि न न संमया॥ नृ संपूजय गत मथ दं
यवां च मि सु ना इ सु ना॥ न न रवां जा यत सिद्धि, कल्प का टि गत न यि

लरु क्का तु गदम धर्क विष्णु पाल यतः सदा ॥ गूडापि संह गं त्यासुः
लरु क्के वनदा न्यदं ॥ गूचं संस्तु यमानो सो दवदव गजानन ॥
उवाच यगमयी त्या वक्ता नैज गतायति ॥ **गरुड उवाच ॥** वज्रं व
ही प्रदास्यामि यत्नं मनसि वर्तते ॥ **वक्ता उवाच ॥** कियमादास्य
महर्षि निविद्य जायते यथा ॥ नवमस्ति तिदवा सो गृहिता मादका
कनशास्य ला कान्त्स मा गच्छ न्यच्छ या गगरा मने ॥ वन्दु लोकं सम
सद्य स्वजिना गतनायक ॥ नूथला समला वक्ता सा मा गूय मूदा

विना ॥ नन्द क्का कापना माद गतनाथः ॥ गमापला दर्म नीयः स नूया
हं सुन्द नश्च दमित्यथ गविना सिगमा कर्त्तुं रुत्पाप्यसि सत्तन
नूद्य प्रह गिला का स्तान्ति यन्म नि पापिनी ॥ य पश्च नि यु मा द न ला
न नाम गला वृत्तं ॥ मिथ्या रि सौ गमाप स युक्ता रु विषां ति रि ग पुर्व
हा हा काशो म हा जातः ॥ गृहा गमाप व रि षने ॥ नूत्यनं स्नान व द नं
दा जल समा वि रगत ॥ कू मूद कू मू दाना थः स्थि ग सु यु क्ता ल यः ॥
नता दवर्षि ग न्य बो नि सौ जा दी न मा द जात ॥ विवा य रु ग वा न्य क

गात्रु ननीदमववीता॥ गरसमभापादवेन्द्रा मङ्क नकननान्य
था॥ केरु मिन्दु सनमयो विष्णु नावापनिष्ठितं॥ नमवदवदवर्ग
वज्रवर्गमगरीसूना॥ सनवभापेभाईव कलिष्ठागिनसंगयथा॥
दवाउवाव॥ केनावायसवनदा गजवक्रा गरदा म्वनशापिना
महा यरु प्राह दन साकं वद प्रहा॥ **पितामहाउवाव**॥ वरुः
थां दवदवसा पूजनियं प्रयत्नतथा कृष्णयद्विष्णुषतनः
कंक यावृत्तनयिया॥ नूप्रयेष्टु सेनेयूक भोदके पत्रिताषय

गु॥ मधुगानैरु विषय स्वयं जीत कामतथा स्वर्तु नृपंगरधमस्य
दोगर्थादि जसर्लमा॥ मङ्गायदक्षिर्धां दद्याद्विरुधार्थनकात्रय
गु॥ प्रवसम्य एत सर्व प्रषया मासगीषागि॥ सगलाकथयामास
वथावुष्मादि गंतुतनु॥ वनं वक्र न नम्यन्त्या यथैकं वक्रक्षपूना
नृविर्वेत्तु वरुगवान् गरसभा वरुगनापिनशा नंकाउ मारंगध
नायकं वरुक्षावदष्टोरुकलानिधनं॥ स्वकागर्धकात्रसकात्र
भानि वरुसि वंद्यं वरुपुसिद॥ प्रसिददवभाजगनिवास

गरसमलं वा उ न व क रु तु ॥ विनिविना गाय स पूर्य मान क म स
मगर्व क नै व हा स्या ॥ यथा ह्यम संपू र्य गरसम नूनं वा शु नि मूढा
विहि ता थ सिद्धि ॥ न दे व न शानि रु पं य सा के हा का म या न स क न
प रा व ॥ य वा सू गी दा सी न न ग्रा मु पा प न या नि पा र्प न न क के
स दे व ॥ न वं सं मु य मा ना सो ब नु ना थ ग जा न न ॥ गरसम उ वा
व ॥ ॥ ॥ शु शो रु न व दा स्या मि व नं कु हि नि सा क न ॥ ॥ व नु
उ वा व ॥ ला का ना द भ नी या रू रु वा ति पू न न व हि ॥ वि धा र्प हि

विभ पा हि लु त्य सा दा गर ध भ व न ॥ श्री गरसम वा व ॥ व न म न्य पु
दा स्या मि ने त द र्प म या न व ॥ विभ र्प कू रू द व म प्रा थ या मा व र्यः
त व ॥ विभ र्प म क ना वृ द क म ला स न र जे न वा न ॥ शु क प द व रु थ
जु य प भ मि स दे व हि ॥ मि थ य वा द मा या स त पा षो ति न रं ग य ॥ मा
सा पो पू र्व भ व त्वा य प भ मि स दा ज ना ॥ रु डा र्पा शु क प द स त र वा दा षा
न जा य न ॥ त दा पु रु ती ला का र्प दि ना या या कृ ता द न ॥ व ड स द भ ना थ
य ग ल ना थ स्या रा मि त ॥ रु ड शु क व रु थ रु य ह्य प भ मि पा य ॥ ॥

मिथ्या पवाद मलीन, आवर्ष न स्याज्जायते ॥ पून न वरुष य वृकल
वानू गधना य कं ॥ कना पाचन देव गुरु शरु व सिन द्र दशा ॥
आगरय म उवाच ॥ सदा कष्ट चतु र्थांशु भाद काद्ये प्र पूर्य मा
गादि तीसदि नै त्वां व सम ल्य क्ति विष्म न न ॥ य थ म क्का य म दूर्य
स र्त्त न प नि क ल्पि नै ॥ द त्वा दि जा य शु द्वा य क थ म् य त्वा वि धाः
न न ॥ स दा न स्य क नि षा मि, सं क ल्य स्य नि वा ग रं ॥ रा ड शु क्त वः
तु थ्मा तु, सं न म यी य नि मां शु रं ॥ रु मा रा वें तु क ल या ना ना पू

षा प्र पू र्य मां ॥ व क्त व न्ना ज य स्य थ्मा, जा ग नं व वि र म ष न ॥ स्या
प यं द व र्णं क रं, थ न्य स्या प नि ॥ र म मि नै ॥ य थ म क्का तु म दूर्य
म न क रं न नि मि र्ति ॥ व क्त व यं स मा व र्णं भा द का द्ये प्र पू र्य मां ॥
न क्का म न व न्ना म थ्मा, व क्त व यं त न गु वि ॥ गा दि ती स दि न त्वां व पू र्णं
प्रा ष्ठ व म नू न ॥ त ज न स्य रु र्प न य थ म क्का नि वि मि र्ति ॥ वं सु मि
व पि या र्थे ति, ग स थि य न मा मु न ॥ ग न्ध र्त्त वा द ना य ति पू ष्ठ सिः
द्वि ष्ट दा य व ॥ प्र य ग ज मू र्वा य नि, दी र्पं मू र्वा क वा रु न ॥ वि ष्ट नाः
थ य नै व द्य, रु त्त्तं स व्वा र्थे सि द्वि द ॥ ता म्ब लं का म नू या य द द्वि र्त्तः

यनदायव॥ ॐ हूँ द २ सु सुदाय पूषा नाम्ना २ अरु कर्मसु ॥ विसेज
नसमाजक ४ सर्वसिद्धिप्रदायक ॥ नवसंपूषा विष्णुर्धनकथाधुत्वा विष्णु
नन ४॥ मप्रकाशनेन तत्सर्वं वाक्त्रायति वेदयता ॥ दाननामनदेवमः
प्रामातृवगारसम्भवा ॥ सर्वप्रसवदादवनिर्विघ्नं कुरु सर्वदा ॥ मा
नात्रमित्रत्राजिच पूषा पाया स्यदहिम ॥ गवाधान्यवतासीसि दयात्स
वस्वधकिता ॥ दत्तातु वक्रसर्वं स्वयं रुजितकासत ॥ भादकायप
मधूत्र त्वलका नवजितं ॥ नवकत्रातिय ४ वं ३ मस्याहं सर्वदा जयं ॥

सिद्धिप्रथनधन्यं ददामि विप्रायुजा ॥ ॐ हूँ लूकागदार्धदेवा गण
नाथविनायक ॥ तद्वत् कुरु कुरु पूतं तत् ४ शुद्धिमवाप्स्यसि ॥ नात्रदनेव
मूकश्च वतचक्रद्विस्वयं ॥ मिथ्यापवादसंशुद्धिद्वितीयं कुरु याचिर्ग ॥ य
४ ल्यतिनृयाणां तं स्वमगतं मलीयकं ॥ वदस्य वंति तं सर्वं तेषां दधान
जायत ॥ रुद्रं कुरु कुरु धर्मात्तु त्वत्स्य दस्यनेकविधा जातं तस्य विद्वानार्थ
॥ आगत्य सर्वं भवतु ॥ यदायदामन ४ कर्षं स ददंत यजयेत् ॥ तदा तदाचः
॥ आगत्य श्रार्यातं कुरु नाशनं ॥ नवमूलागता दवा ग ॥ ४ ४ कुरु तापिन ४ ॥
यदायदायश्चसि कार्यमूतिर्गता त्रिनवधकत्रातिसर्द्धं ॥ सिद्धिनिक्ताः

या निमनामिगानि किं शूलं विष्टं ह न प्रसन्न ॥ ३ ॥ भवनस्यासितपद्म
चैतुर्था म कुरु नृपि ॥ ४ ॥ अथ यावत्सा सचतुष्टयं ॥ ॥

ॐ तिष्ठ स्व न्य मन्त्राणां समन्त काया रयान समाप् ४॥ ॥ गुरु मस्तु ॥ सिद्धि
नस्तु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ समस्त ६६ ह वृष्ट कृष्ट ३ सिद्ध का रू ला गुरु
मस्तु सर्व दौ ॥ या दृष्टि यस्तु कंद दृष्टा ता दृष्टि लिखितं मया ॥ यदि शुद्धं
मस्तु इवाममदाया न दीयतां ॥ लिखितं गुरु उ ना नां ॥

उद ग वला
 वल वला
 मारु वला
 नुम न वला
 काल वला
 गुरु वला
 गोम वला
 उम ड वला

समकाल
नमनकला
कालकला

यटि
यटि
यटि
यटि
यटि
यटि
यटि
यटि
यटि

मेमवालय
येदि
येदि

नाथि या
 उद्गवला
 शुरुवला
 नूतनवला
 बलवला
 भागवला
 कालवला
 भारवला
 उद्गवला

समवालयो
नृमन्त्रवेला
यजवेला

स	टि	४
न	टि	४
य	टि	४
र	टि	४
ल	टि	४
व	टि	४
श	टि	४
ष	टि	४
ह	टि	४

८४५
८४५

यम् मा द वा रु न स्य व न्दु स्य
 व न्दु ॥ उ द य सृष्टि नू पा य क
 य न वा य न न म धा ज न स्या ध
 ग सृष्टि ना स्ते न ग सृष्टि नू पि
 या ॥ ध न क्त्वा दि न स्मा न य ॥ आ
 मा रु द्या नि ॥ ध ना पु स्ता दि न द
 दि क्ष म वि द्य ॥ वि स र्ज न ॥ ध न
 धू न का व व न्दु मा न्द्र पू र्ण या लि
 न पा ल न या य ॥ ॐ न वि ब्र ह्म णि
 वि धि स मा फ क्ष ॥ ॥ शु र ॥ व न्दु
 र्च द ॥ क्ष म व न्दु ॥ नि सा क ल व
 द ॥ र्च द व न्दु ॥ धा उ र्च व न्दु न
 मा र्क्षु र्च ॥ ॥ ॐ न म आ ग र ॥
 धा ग न म ॥ ॥ धी क सु उ वा न्य
 मा सि रु द प द सु र्च व न्दु र्च
 ज य न्दु प ॥ मा सि मा ध ध म व र ॥
 मा र्ज नि र्च ध वा रु व न ॥ ग इ व
 क्त्वा रु र्च का र्च व न्दु र्च यौ पू र्ण
 य र्च प ॥ य दा या द्रु व न रु र्च
 रु दा पू र्ण ग र्ध म वि प क्ष ॥ या न
 शु क्ति न ॥ सा र्च म धा र्च प
 र्च र्च न ॥ नि र्च मा न्य स व र
 न ॥ र्च र्च र्च न वा य न ॥ स

ययत्नेग॥ दुर्वोयुग्मं हृदि लोतुः
 न्ययुष्माद्वेयुर्ग॥ न के क ने नाना
 तु दले के सर्वे नाम रि॥ नृथे क
 विभर्ति नृत्त॥ भाद कान्द क पा
 विगान्॥ स्थापयित्वा गत्वा धर्मे
 वाक्क सभय निवद धन॥ कात्माने
 मिले के कर्म पूजयदि सुदवता॥
 वाक्क सभका इयत्त ध्यस्तु जीयाने
 लवङ्गिनी॥ विज्जम्भ रुवन्ने सः
 त्यम्भयादिर्न॥ वेष्टु वाद्या सु
 दिक्ता सुत्तादि पथा गत्वा विष्ट
 ॥ न स्मिने सैव विष्टु गि सभा
 वत धर्मे मा॥ देवा वोरु म्खाद
 वा पूजिता स्मृते संभय ॥ वसिः
 का द्यो मा रु ग नो ३ प निरु क्खारु व
 नि य ॥ ग सि न्ने पूजा ता वि यारुः
 स्था सिद्धि विना यक ॥ य ३ ० ० ०
 ३ नृत्तान्निर्णय व य द्यु समे हि
 त ॥ सिध्दं नि स र्व का यो हि सिः
 दि न सम प्र सा द त ॥ ० ० ० ति
 श्री सिद्धि विनायक वर्ग ॥ गुरु

॥

॥

॥

॥

॥

श्री गणनाथस्य स्वर्धेना याम अ
 कृतिं॥ नृध वासु न्मयी कृया दि
 रुभार्थन को न यत्न॥ गणनाथ सि
 दि विनायक॥ गन्तु पञ्च स्तान्ना
 मु क द न्तु र्ण कर्ध्व गज व के र
 रुजुर्द॥ पाभं कृधु धने द व आय
 सिद्धि वीनायक॥ कृत्वा प्रजाय
 यत्नेने स्नान पञ्च मुने ४ पृथक॥
 गत्वा धर्मे नि नाम्नाये गन्ध द द्या
 वरु कित ॥ नृवा रुता सनाथा
 व द्वा य भ्यस्तु यत्ने ३ ग क
 से व यु दे व र्ण युग्म द द्या च रु
 त ॥ विनायक मियूषा नि भू
 पया मा सुगु यत्न॥ दि पञ्च द
 सि या य नि ने वा द्य वि द्य ना भ
 ने॥ किं क्षिप्त्वा वध्द पूजा वि ना भ
 से ३ सम ण ये न॥ त गो द वी क
 नो न्ने ३ रु वि स रि द्र क म्भ वः
 दि॥ पुजनी य प्र यत्ने न न रि
 नो म ये द ३ सा दा॥ गत्वा वि प ने
 म स्तु ३ मा पूजा य ना भ न॥ दि
 नाथ के भ पूज नि स व सिद्धि
 दा य के॥ नृक द न्ने रु व के नि
 तथ म्भ क मा ग ना वी ना य
 क्क माले तु नृ व र्ण य पञ्च नि य

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ रुमाद्रोरुविष्णोरुग्रं ॥ मासिरुद्रपदं सुः
क्रा. भिवलाक प्रपूजिता ॥ गस्यास्त्रा ननं तथा दानं उ यवा सा वनं न तथा
क्रिया मा धर्मं गुणं यसादा दं नि नानु य ॥ वरुथो यरुथं गं ॥ नू स्या
भववच्यु दे गनन दा र्ष न्ना ह ॥ पना भ ग ॥ क न्यादि ह्य वरुथं गु सु क
वच्यु स्य द र्म नं ॥ मिथ्या रि दुष नं कू यो रु स्या त्य ग्ग न नं न ला ॥ न दा र्ष
भानये ॥ विष्णु पूजा रत्न ॥ सिंह प्रसन म व वि, ति हा जाम्बू व ना ह न ॥
सू क मा लं क मो ना दि, सु द्यै वै ष स्य म न्क का ॥ नू थ स्य म न्क का पा र्थ्या नं
॥ न न्दि क ग्ग न उ वा व ॥ ग्ग सू ष का ग्र यि र्हं स न्क ग र्ग ग्ग ग्ग न व र्ग सु र्ग
वरुथो गु क्क प द्गु स दा का यो प य ह न ॥ से न क्क मा ग यो र्ग न्दः

यदि कुरु मात्सर्गनाजिवापूषवापी यः कुर्याद्वनमूलम् ॥
माययं त्यागुविषयं संकष्टा दुर्गतिर्न नर्त ॥ नृपवा दहनं चैव सर्ववि
द्यप्रसाधनं ॥ कौतात्रविषमवापि गृहं जातकलुषं तथा ॥ सर्वसिद्धिः
कर्मचैव वृत्तानामि मूलमूलम् ॥ गजाननपि यं वाथ विष्णुलाकेषु
विद्युर्न ॥ नृगानविद्युर्न वृक्षः सर्वसंकष्टनाशनं ॥ **सनत्कुमाः**
उवाच ॥ कनायादोयुजावीर्यं मथ्यलाके कथं गतं ॥ नृत्तमसं
विस्मिर्त्यं बुद्धिगरसंघजं वनं ॥ **नन्दिः कथं उवाच ॥** चक्रवर्त
जगन्नाथं वासुदेवापनायवान् ॥ नृदिषूना नदनैव वृथालोक
नष्टमय ॥ **सनत्कुमाः उवाच ॥** ॥ षड्गुरोरेष्वर्षे संयत्तं सुप्रसिद्धं

नका नकाशा वासुदेवाजगद्वापि प्राफवात्तावृत्तं कथं ॥ नृत्तदा स्वयं
माखानं बुद्धित्वनन्दिः कथं ॥ **नन्दिः कथं उवाच ॥** ॥ **उवाच ॥**
वनागार्थं वासुदेवसुतावृत्तं ॥ नामकं सोमसूत्यान्ता पद्मनारुह
नायूर्यो ॥ जनासवरुया कृष्णो दात्र की समकल्यय ॥ विश्वकर्माः
वमाद्रुय पूतिहाट कनिर्मिता ॥ नृगषाडसंसारं सुखं श्रीर्षं चैव
नाधिकं ॥ रुवनामिमनाहानि नृषां सख्यकल्ययन् ॥ पात्रिज्ञान
नृष्वेव तासीं शागमय कल्यार्थं ॥ यादवानां गृहास्तु षट्पदं धनं
कोटय ॥ नृन्यपि वरुवालोका वसन्ति विगता इना ॥ यत्किं विधि
लाकेषु सन्त्यननं वृद्धं ॥ सदाजितयसन्नाथो पूजावृत्तं विस्तु

नमो॥ नमो शशिनी जमासा द्यु नमनस्तुत याव स॥ सयाजिन सुयस्तु
 यस्तु योमदि ग्धवूदि मीमानु॥ यतं निज मन ग्ध स्तु योसंवदु ला
 यन॥ नन॥ यस्तु सन्तारुग वास्तुयाजिन पूज॥ स्तिन॥ सयाजि कापिगु
 शाव दृष्टादवदि वाकजी॥ नजा नारदन मस्तु र्थ नमस्तु सर्वतामस्तु
 विग्वयापि नमस्तु नमस्तु विग्वनूयि रणा काग्वययन मस्तु रु द
 जिद ग्वन मास्तु न॥ यरु नाजन मस्तु नमस्तु यनु नाविष॥ वदं व
 यन मस्तु रु सर्वदवन मास्तु न॥ यमिद पाहि दे वरक्षा सुद शुमान्दि
 वाकजी॥ दूसा संस्तु यमाना सो दवदवदि वाकजी॥ सिग्वं गं रीवमय

नं सयाजिनमूवावह ॥ वनं बुद्धिप्रसन्नास्मि यत्कृमनसीमलुतं ॥ स
याजिनमहारागः शुभाहं न वनिश्चयातू ॥ **सयाजिन उवाच** ॥ सर्मन
मैके निंदहि यन्निगुषासिरासुत ॥ ददौ च न स्य न डलं स्वकल्लदव
नार्यसि ॥ **सुय उवाच** ॥ रागाद्वैकं भगवतं कुरुं प्रवतसो महामसि ॥ शुवि
ष्मता दायार्थं जलमनं मदारुमं ॥ सनाजिनं कुरु रसेन न द शुविर्दतिः
मानवै ॥ ॐ सुक्तां न द रध देवो न जानासि दिवा कन ॥ नत्कध गत्तु
नुमा मनुषीपूनी सकल सविवध सत्त्वै ॥ ददुला कामनसा दिवा
कनै सयितयं न स्मिना दृष्टय ॥ समागताय रु निदग्ध दिधीनी

जनाई नंदू मसंभयन॥ नार्यं सहजं शुभं गिरिहलाकाऽसुजाजिताय
मधिकं धरास्वतः॥ समनकं माहावर्तं दृष्ट्वा तत्कलमधुल॥ स्पृष्टं
वक्रजगन्नाथं नजहावमलितं न॥ सखाजिताया नारुया योवयिष्य
निर्मां हनि॥ प्रसन्नाय ददो जगि कथं यं शुविना लया॥ जक दार्कं सृद
रहा सो द्विफा नं मधि मूह मं॥ मृगया को व माथ य यथो कृष्ण मसं यूना
॥ नृसो नृठा शुविष्म सो ह नं सिंह म न द नाना॥ नल मादा य सिंह पिग
दृजा म्ब व नाहन॥ नित्वा सवी व न नत्तं ददो यूना य जा व नाना॥ पः

त्रिविधं कृष्णाय साकिः सर्वं समावृत्तं॥ प्रसन्नाद्या पिना जानि हन
कृष्ण न निष्ठिगं॥ मधि नारु न हा क रं वा न्धवः पापना ह न॥ दानका
वा सिन सर्वं ज ना उ वूः प न स्य नं॥ व थ म वा द सं न फ कृष्णायि न ग न
वृत्तं॥ सहे व नं य थ र्थं य दृष्ट्वा नि सिंह पा नि न॥ प्रसन्न वाहनं यू नं न स्य
दानू स नं यू नं॥ अक्षरानि ह नं दृष्ट्वा कृष्ण न दी लं स नं॥ विवध था
जन भ न मं थ का नं स न ज सा॥ निवा य द द भ र्थ य प्रा सा दं व द रु मि कं॥
कू मा नं जा व नं न स्य दा ल या म मि न यू नं॥ मा सि कृ लं रं व मा नं व द द

मरुगवन्दुजि॥ नूपथोवनसंपत्ता. कन्या जाम्बवनिधिं पूनशा दालाः
दालयमानं वददमकमलकुलम्॥ विस्मयं वमरुचक्रे दृष्टान्तीवान्
हासिनि॥ सिद्धयसनमवधी. सिद्धगा जाम्बवनादन॥ सकृन्मात्रकर्म
नादि सुवक्षस्यमनकशा मदनकृजदाहात् दृष्टान्तकमलकुलम्
॥ उवाच ललितं वाक् गम्यतां गम्यतामिति॥ तर्हि गदित्वा वरगद्यर्थ
वक्तुं गजुजाववान्॥ ॐ ह्य कध्वरि सन्तु सौमिः शेषयस्मिन्नापवा
न्॥ नृकध्वरि स ह्योस्मय मरुस यूयूरधनन॥ ननायूडु मरुधा

न. रुजि जाम्बवनासुदा॥ दानकावा सिनः सर्वगनासु सफभादिन
मिरकृष्णजकितावा निःसृदि ग्ध विवाय्ये॥ पत्रला कक्रियावकु
पत्रगस्युत्तरदा॥ नृकविमदिनयाव. दादुप्रद नरत्नविजु॥ यू
यूरधनननरुध. यूडु कर्मविताधिन॥ जाववान् प्राकनं सुत्वा ददा
देववर्त्म मरुन्॥ **जाम्बवान उवाच**॥ नृजया दे स्रेनेः सर्वयक्षनाक
सदानवे॥ लयाजिता रुदवम. दवस्त्रमसि स्थितं॥ जानत्वा विष्णु
वंत जा नान्यथावलमी दम॥ ॐ निप्रसाद्य देवम. ददे मासि कर्मरु

मी॥ सुगं जाव व नी या थ रु या र थ व न व सि नि ॥ पा सि नं ग्र ह याम
स द व द व व जा व वा नु ॥ म सि मा दा य द वा पि, जा व व त्या पि सं य नं ॥
न दु, लो नं समा व ष्ट, दा न का वा सि ना न न ॥ सु ग्रा जि न स्य मा ति क दः
रु वा त्सं स दि स्थि त ॥ मि थ्वा रि म्भ प सं शु डि, प्रा फ वा न्म धू सु द न ॥ स
जा जि नो पि सं य सु ॥ क ष्टा य य द दो सु ता ॥ स र्वा रा मा म हा वृ डि द दो
स र्वे शु र्मा नि ना ॥ म न व न्वा कु न मू र्वा, उ वा उ षू मा न सा ॥ स जा जि न
न न वे नं, व कु न न वि रा ष स ॥ दू ग्रा त्मा स न व न्वा पि, जा क क ष्टः
पि कृ ष वि न् ॥ स या जि नं नि रु त्या सु, म हीं ज य रू पा प थि ॥ क ष्ट स य

स र्वा, समा व ष्ट वि व थि र्ग ॥ लू न नि षा व दि का पि, क ष्ट क य न
ना य क ॥ व न द व पू न वा र्क, मू वा य व न सी ध न ॥ रु त्वा स या जि र्ग द
त्वा, म धि मा दा य कृ ति ॥ नि रु त्वा स न व न्वा य, ग। ही त्वा न न मा व था।
म म र्ग ग्ध व न द रु वि ष्ठ नि न सं ग य ॥ व न कु त्वा रु य न सो, स न
ध न्वा पि या द व ॥ नू दू या कु न ना मा न, मा धि क य द दो व स ॥ न
नू दू व उ वा व ग, नि ग ना द रु धा दि र्ग ॥ न थ र्वा व नू ग कृ ता, न
दा वा स ज ना द नो ॥ म न थो ज न मा ज ह, म मा न व उ वा न दा ॥ य
ना य मा ना नि रु त ॥ य ना नि मु प दा ति ना ॥ न थ र्वा व न द व ग रु नि